कव्वाली

तेरे इस दर के सिवा,दर न कोई देखा है
तेरी चरचा न हो,बशर न कोई देखा है

1- तेरे इस दर पे जो आते हैं नसीबों वाले
तेरे दर्शन को जो पाते है नसीबों वाले
तेरे इस दर से सब मन की मुराद मिलती है
मुरझाये दिल की कली आके यहां खिलती है
कोई मायूस हो जाते हुए न देखा है

2-हज़ारों दर हैं मगर इस तरह का दर हीनहीं
बहुत भटकी हूँ मगर आके मिला चैन यहीं
मेहर महबूब की किसी किसी पे होती है
वो खासलखास जो रूह अर्श की होती है
कोई मायूस हो जाते हुए न देखा है

Nijanand App